

## निराला के काव्य में मानवीय संवेदना

नेहा कुमारी

ग्राम- खदियाही, पोस्ट- विभूतिपुर,  
जिला- समस्तीपुर (बिहार 848211)

### सार

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक हिन्दी कविता के ऐसे कवि हैं जिनके काव्य में मानवीय संवेदना अत्यंत व्यापक, गहरी और बहुआयामी रूप में अभिव्यक्त होती है। उनकी कविता में करुणा, विद्रोह, आत्मसम्मान, श्रम-सौंदर्य, नारी-गरिमा, सामाजिक न्याय, प्रकृति-बोध, आध्यात्मिकता और मानवीय स्वतंत्रता एक-दूसरे से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। निराला की संवेदना केवल भावुक दया नहीं है; वह अन्यायपूर्ण सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध नैतिक प्रतिरोध का रूप धारण करती है। भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर, सरोज-स्मृति, राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता और तुलसीदास जैसी रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि निराला मनुष्य को उसकी पीड़ा, संघर्ष, श्रम और गरिमा के साथ देखते हैं। वे हिन्दी कविता को अभिजात्य सौंदर्य-बोध से निकालकर जनजीवन की कठोर यथार्थभूमि पर स्थापित करते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में निराला के काव्य में मानवीय संवेदना के विविध रूपों—करुणा, सामाजिक चेतना, नारी-सम्मान, श्रम-बोध, लोकजीवन, विद्रोह और आध्यात्मिक मानवतावाद—का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निराला की मानवीय संवेदना आधुनिक हिन्दी कविता को नैतिक गहराई, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक ऊँचाई प्रदान करती है।

**मुख्य शब्द:** निराला, मानवीय संवेदना, करुणा, सामाजिक यथार्थ, श्रम-सौंदर्य, नारी-गरिमा, आधुनिक हिन्दी कविता।

### 1. प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। वे छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं, परंतु उनकी काव्य-दृष्टि छायावादी सौंदर्य, रहस्य और आत्मानुभूति तक सीमित नहीं रहती। उनके यहाँ जीवन की विषमता, मनुष्य का दुख, सामाजिक अन्याय, श्रम की गरिमा, नारी की पीड़ा, जनजीवन की विडंबना और मानवीय स्वतंत्रता का स्वर अत्यंत प्रखर रूप में उपस्थित है [1]। इसीलिए निराला को हिन्दी कविता में मानवीय संवेदना के सबसे शक्तिशाली कवियों में गिना जाता है।

निराला का जीवन स्वयं संघर्षों से निर्मित था। आर्थिक अभाव, पारिवारिक आघात, सामाजिक उपेक्षा और साहित्यिक संघर्षों ने उनके व्यक्तित्व को गहरा बनाया। परंतु इन संघर्षों ने उन्हें कठोर या आत्मकेंद्रित नहीं बनाया; इसके विपरीत उनकी कविता में पीड़ित मनुष्य के प्रति करुणा और अन्याय के प्रति विद्रोह की चेतना और तीव्र हुई [2]। *सरोज-स्मृति* में निजी शोक जिस प्रकार व्यापक मानवीय करुणा में बदलता है, वह निराला की संवेदना की गहराई का प्रमाण है [3]।

मानवीय संवेदना का अर्थ केवल दुख का वर्णन नहीं है। साहित्य में संवेदना तब सार्थक होती है जब कवि मनुष्य के जीवन-संघर्ष को भीतर से अनुभव करे और उसे कलात्मक रूप में अभिव्यक्त करे। निराला की कविता में यह संवेदना केवल करुणा नहीं, बल्कि न्याय-बोध भी है। वे मनुष्य को दया का पात्र नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और संघर्ष की जीवित सत्ता के रूप में देखते हैं [4]। यही विशेषता उन्हें आधुनिक हिन्दी कविता में जनमानस का कवि बनाती है।

## 2. निराला की मानवीय दृष्टि का स्वरूप

निराला की मानवीय दृष्टि का आधार जीवन के प्रति गहरी आस्था है। वे मनुष्य को उसके बाहरी वैभव, जाति, वर्ग, धर्म या सामाजिक प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि उसकी पीड़ा, श्रम, आत्मा और संघर्ष से पहचानते हैं। उनके यहाँ मनुष्य की गरिमा सबसे बड़ा मूल्य है। यह गरिमा कभी भिक्षुक के भूखे शरीर में दिखाई देती है, कभी पत्थर तोड़ती स्त्री की श्रमशील देह में, कभी बेटी की स्मृति में, कभी राम के संघर्षशील संकल्प में और कभी समाज द्वारा उपेक्षित जीवन-रूपों में [5]।

निराला का मानवतावाद भावुक, अमूर्त या उपदेशात्मक नहीं है। वह जीवन के ठोस यथार्थ से जन्म लेता है। *भिक्षुक* में भूख का चित्रण सामाजिक करुणा उत्पन्न करता है, लेकिन कविता केवल करुणा पर रुकती नहीं; वह उस सामाजिक व्यवस्था पर मौन प्रश्न उठाती है जिसमें मनुष्य रोटी के लिए अपमानित होता है [6]। *वह तोड़ती पत्थर* में श्रमशील स्त्री का चित्रण हिन्दी कविता में अभूतपूर्व है। कवि स्त्री को दया की वस्तु नहीं बनाता, बल्कि उसके श्रम, धैर्य और मौन गरिमा को सामने लाता है [7]।

निराला की मानवीय संवेदना का एक प्रमुख पक्ष यह है कि वे पीड़ा को महिमामंडित नहीं करते। वे दुख को जीवन की नियति मानकर स्वीकार नहीं कर लेते, बल्कि उसके सामाजिक कारणों को संकेतित करते हैं। इसीलिए उनकी कविता में करुणा और विद्रोह साथ-साथ चलते हैं [8]।

## 3. करुणा और निजी शोक का व्यापक मानवीकरण

निराला की करुणा का सबसे मार्मिक रूप *सरोज-स्मृति* में दिखाई देता है। यह कविता उनकी पुत्री सरोज की मृत्यु पर लिखी गई है, परंतु यह केवल व्यक्तिगत शोकगीत नहीं है। इसमें पिता का दुख जीवन की नश्वरता, सामाजिक अभाव, पारिवारिक विफलता और मनुष्य की असहायता के व्यापक अनुभव में बदल जाता है [9]। निराला अपने निजी दुख को आत्मदया में नहीं बदलते, बल्कि उसे आत्मालोचन और मानवीय संवेदना की गहरी भूमि बनाते हैं।

*सरोज-स्मृति* में कवि का शोक अत्यंत व्यक्तिगत है, किंतु उसकी अभिव्यक्ति व्यापक मानवीय अनुभव को स्पर्श करती है। यही महान कविता की विशेषता है कि वह निजी अनुभव को सार्वभौमिक अर्थ देती है। निराला की करुणा में भावुकता है, परंतु वह भावुकता कमजोर नहीं है। उसमें आत्मग्लानि, सामाजिक विवशता, आर्थिक यथार्थ और जीवन-दर्शन का गहरा मिश्रण है [10]।

निराला की करुणा केवल परिवार या आत्मीय संबंधों तक सीमित नहीं है। वे समाज के अजनबी, उपेक्षित और पीड़ित मनुष्यों के प्रति भी उतनी ही गहरी संवेदना रखते हैं। यह करुणा भारतीय काव्य-परंपरा की दया, भक्ति और लोकमंगल की भावना से जुड़ती है, किंतु आधुनिक सामाजिक चेतना के कारण अधिक तीखी और यथार्थवादी हो जाती है [11]।

## 4. 'भिक्षुक': भूख, अभाव और सामाजिक विवेक

*भिक्षुक* निराला की मानवीय संवेदना की अत्यंत महत्वपूर्ण कविता है। इसमें भूख से पीड़ित मनुष्य का चित्रण है, लेकिन यह चित्रण केवल करुणा दृश्य नहीं है। कविता समाज की आर्थिक विषमता, असमान वितरण और मनुष्य की विवशता पर गंभीर प्रश्न उठाती है [12]। भिक्षुक का शरीर, उसकी प्रतीक्षा, उसकी दृष्टि और उसकी असहायता—ये सब मिलकर उस समाज का रूपक बन जाते हैं जिसमें कुछ लोगों के पास अत्यधिक संसाधन हैं और कुछ लोग अन्न के लिए तरसते हैं।

निराला यहाँ दया की भाषा में नहीं, बल्कि संवेदना और सामाजिक विवेक की भाषा में लिखते हैं। भिक्षुक कवि के लिए 'दृश्य' नहीं है; वह मनुष्य है, जिसकी भूख कविता की नैतिक चिंता बन जाती है। यही कारण है कि *भिक्षुक* आधुनिक हिन्दी कविता में सामाजिक करुणा की सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्तियों में गिनी जाती है [13]।

इस कविता में निराला की दृष्टि शोषित मनुष्य को केंद्र में लाती है। परंपरागत कविता में नायक, नायिका, प्रकृति और सौंदर्य प्रमुख विषय रहे थे; निराला ने भूखे मनुष्य को काव्य का केंद्र बनाया। यह परिवर्तन केवल विषय का परिवर्तन नहीं, बल्कि काव्य-दृष्टि का परिवर्तन है। इससे हिन्दी कविता का मानवीय क्षितिज विस्तृत होता है [14]।

## 5. 'वह तोड़ती पत्थर': श्रम-सौंदर्य और नारी-गरिमा

वह तोड़ती पत्थर निराला की संवेदना का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस कविता में इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ती हुई स्त्री का चित्रण है। कवि उसे केवल गरीब स्त्री के रूप में नहीं देखता, बल्कि श्रम, धैर्य और आत्मसम्मान की प्रतीक के रूप में देखता है [15]। उसकी देह पर श्रम का भार है, जीवन में अभाव है, फिर भी वह टूटती नहीं है।

इस कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि निराला स्त्री को दया की वस्तु नहीं बनाते। वे उसकी करुण स्थिति देखते हैं, परंतु उसके भीतर की शक्ति और गरिमा को भी पहचानते हैं। यह दृष्टि हिन्दी कविता में नारी के पारंपरिक सौंदर्यपरक चित्रण से अलग है। यहाँ नारी अलंकार नहीं, जीवन-संघर्ष की वास्तविक नायिका है [16]।

श्रम-सौंदर्य की दृष्टि से भी यह कविता महत्वपूर्ण है। निराला श्रम को कुरूप या निम्न नहीं मानते। श्रम में मनुष्य की जीवटता, नैतिक शक्ति और जीवन-संघर्ष की गरिमा देखते हैं। इस प्रकार यह कविता मानवीय संवेदना को सामाजिक न्याय और श्रम-सम्मान से जोड़ती है [17]।

## 6. विद्रोह और मानवीय संवेदना का संबंध

निराला की मानवीय संवेदना केवल करुणामूलक नहीं, विद्रोहमूलक भी है। वे अन्याय, रूढ़ि, पाखंड और सामाजिक असमानता के विरुद्ध खड़े होते हैं। उनकी कविता में करुणा मनुष्य को निष्क्रिय नहीं बनाती, बल्कि प्रतिरोध की नैतिक शक्ति देती है [18]। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में दार्शनिक गहराई और सामाजिक आक्रोश साथ-साथ दिखाई देते हैं।

कुकुरमुत्ता में निराला सामाजिक अभिजात्यवाद और स्थापित सौंदर्य-बोध पर तीखा व्यंग्य करते हैं। यह कविता सामान्य, उपेक्षित और अस्वीकार किए गए जीवन-रूपों की उपस्थिति को महत्व देती है [19]। बेला, नए पत्ते और अन्य रचनाओं में भी निराला की भाषा और दृष्टि परंपरा को चुनौती देती है। वे कविता को केवल मधुरता और अलंकरण तक सीमित नहीं रखते; वे उसे जीवन की कठोरता और विडंबना से जोड़ते हैं [20]।

निराला का विद्रोह मानवीयता से पैदा होता है। वे विद्रोह इसलिए करते हैं क्योंकि मनुष्य का अपमान उन्हें स्वीकार नहीं। यह विद्रोह किसी अमूर्त क्रांति का नारा नहीं, बल्कि संवेदनशील मनुष्य की नैतिक प्रतिक्रिया है। इसलिए निराला की कविता में करुणा और संघर्ष का अद्वितीय संयोग मिलता है।

## 7. आध्यात्मिकता और मानवीय करुणा

निराला के काव्य में आध्यात्मिक चेतना भी उपस्थित है, परंतु वह जीवन-विमुख नहीं है। राम की शक्ति पूजा में राम का संघर्ष मनुष्य की आत्मशक्ति और संकल्प का प्रतीक बन जाता है [21]। यहाँ आध्यात्मिकता कर्म और संघर्ष से जुड़ती है। राम देवी चमत्कार से नहीं, बल्कि साधना, शक्ति और आत्मबल से आगे बढ़ते हैं। यह दृष्टि निराला के मानवीय मानवतावाद को भारतीय सांस्कृतिक आधार देती है।

निराला की आध्यात्मिकता का संबंध करुणा से है। वे संसार को माया कहकर त्यागने की बात नहीं करते। वे संसार की पीड़ा को अनुभव करते हैं और मनुष्य के पक्ष में खड़े होते हैं। भारतीय भक्ति और वेदांत की परंपरा में जो करुणा, आत्मबोध और व्यापक जीवन-संबंध का विचार मिलता है, निराला उसे आधुनिक सामाजिक चेतना से जोड़ते हैं [22]।

इस दृष्टि से निराला का मानवतावाद केवल पश्चिमी आधुनिकता से उत्पन्न नहीं है। उसमें भारतीय ज्ञान-परंपरा, भक्ति-संवेदना, वेदांतिक आत्मबोध और आधुनिक सामाजिक न्याय-बोध का समन्वय है [23]।

## 8. भाषा, शैली और संवेदना की प्रामाणिकता

निराला की मानवीय संवेदना उनकी भाषा और शैली में भी दिखाई देती है। वे संस्कृतनिष्ठ गंभीर भाषा, लोकधर्मी शब्दावली, मुक्त छंद, व्यंग्य, गीतात्मकता और कथात्मकता—सभी का प्रयोग करते हैं। उनकी भाषा विषय के अनुसार बदलती है। राम की शक्ति पूजा में भाषा गंभीर और ऊर्जस्वी है, जबकि कुकुरमुत्ता में वह व्यंग्यात्मक और बोलचाल के निकट है [24]।

भिक्षुक और वह तोड़ती पत्थर में भाषा अपेक्षाकृत सीधी, दृश्यात्मक और मार्मिक है।

निराला ने हिन्दी कविता को छंद और भाषा की परंपरागत सीमाओं से मुक्त किया। यह मुक्ति केवल कलात्मक प्रयोग नहीं थी; इसके पीछे जीवन की व्यापकता को व्यक्त करने की आवश्यकता थी। पीड़ित मनुष्य, श्रमिक स्त्री, भूख, विद्रोह और करुणा को व्यक्त करने के लिए उन्हें ऐसी भाषा चाहिए थी जो जीवन की वास्तविकता को वहन कर सके।

इस प्रकार निराला की भाषा उनकी मानवीय संवेदना की वाहक है। वह बनावटी नहीं, जीवन-स्पर्शी है। उसमें करुणा है, आक्रोश है, संगीत है, व्यंग्य है और आत्मीयता है।

## 9. निराला की मानवीय संवेदना की समकालीन प्रासंगिकता

निराला की मानवीय संवेदना आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक समाज में आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, श्रम-असुरक्षा, स्त्री-असमानता, सामाजिक विभाजन और मानवीय संवेदनहीनता जैसी समस्याएँ लगातार बनी हुई हैं। ऐसे समय में निराला की कविता मनुष्य को केंद्र में रखने की शिक्षा देती है। उनकी कविता यह बताती है कि साहित्य का वास्तविक उद्देश्य केवल सौंदर्य का सृजन नहीं, बल्कि मनुष्य की गरिमा की रक्षा भी है।

आज जब उपभोक्तावादी संस्कृति मनुष्य को वस्तु में बदलने का प्रयास करती है, निराला की कविता भूखे, श्रमिक, पीड़ित और संघर्षशील मनुष्य की ओर देखने का नैतिक आग्रह करती है। उनकी संवेदना हमें यह सिखाती है कि करुणा और न्याय को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। सच्ची करुणा अन्याय के विरुद्ध आवाज बनती है।

निराला की कविता शिक्षण और मूल्य-शिक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों में सहानुभूति, सामाजिक जिम्मेदारी, नारी-सम्मान, श्रम-सम्मान और आत्मबल विकसित करने के लिए उनकी कविताएँ अत्यंत उपयोगी हो सकती हैं। इस अर्थ में निराला केवल साहित्यिक कवि नहीं, बल्कि मानवीय व्यक्तित्व-निर्माण के कवि भी हैं।

## 10. निष्कर्ष

निराला के काव्य में मानवीय संवेदना अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त होती है। उनके यहाँ करुणा है, परंतु वह निष्क्रिय दया नहीं; विद्रोह है, परंतु वह अराजक नहीं; आध्यात्मिकता है, परंतु वह जीवन-विमुख नहीं; सौंदर्य है, परंतु वह जनजीवन से कटा हुआ नहीं। निराला मनुष्य को उसकी संपूर्णता में देखते हैं—दुख में, संघर्ष में, श्रम में, प्रेम में, शोक में, विद्रोह में और आत्मसम्मान में।

भिक्षुक में भूख की करुणा, वह तोड़ती पत्थर में श्रम और नारी-गरिमा, सरोज-स्मृति में निजी शोक का मानवीकरण, राम की शक्ति पूजा में संघर्षशील आत्मबल, और कुकुरमुत्ता में अभिजात्य जीवन-दृष्टि पर व्यंग्य—ये सभी निराला की मानवीय संवेदना के विविध रूप हैं। उनकी कविता आधुनिक हिन्दी साहित्य को मानवीय गहराई, सामाजिक दृष्टि और नैतिक ऊँचाई प्रदान करती है। इसीलिए निराला आज भी हिन्दी कविता के सबसे जीवंत और प्रासंगिक कवियों में हैं।

## संदर्भ-सूची

1. नामवर सिंह, छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2012.
2. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना, भाग 1. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सरोज-स्मृति. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
4. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, आधुनिक हिन्दी कविता. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2014.
5. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2015.
6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अनामिका. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', परिमल. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.

8. रामस्वरूप चतुर्वेदी, *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2011.
9. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *गीतिका*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
10. रामविलास शर्मा, *निराला की साहित्य साधना*, भाग 2. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
11. रामचंद्र शुक्ल, *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2009.
12. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *अनामिका*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
13. विश्वनाथ त्रिपाठी, *हिन्दी कविता का विकास*. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 2012.
14. नंददुलारे वाजपेयी, *हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
15. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *परिमल*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.
16. मैनेजर पांडेय, *साहित्य और इतिहास-दृष्टि*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2013.
17. रामविलास शर्मा, *निराला की साहित्य साधना*, भाग 3. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
18. नामवर सिंह, *कविता के नए प्रतिमान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011.
19. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *कुकुरमुत्ता*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2007.
20. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *नए पत्ते*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
21. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *राम की शक्ति पूजा*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
22. हजारीप्रसाद द्विवेदी, *हिन्दी साहित्य की भूमिका*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2007.
23. एस. राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन*, खंड 1. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस, 2009.
24. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', *परिमल*. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2006.